METRO

Mysore mission to preserve primitive tongue, protect tribe identity

A dictionary in Birhor?

S Imtiaz Hasnain at Karim City College on Friday.
Picture by Bhola Prasad

OUR CORRESPONDENT

Thanks to the Centre, there is now hope that the language of Birhors, a primitive tribe of, will survive the test of time.

At the behest of Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysore, a three-member team is in the state to conduct research on Birhors and come out with pictograms, dictionaries, an encyclopaedia and documentation based on their culture.

The team, comprising S. Imtiaz Hasnain of Aligarh Muslim University, Sangeeta Sarkar of Calcutta University and Farooq Ahmed Mir of Kashmir University, have taken up the project for CIIL under the aegis of the HRD ministry's Scheme for the Preservation and Protection of Endangered Languages (SPPEL).

"SPPEL was launched last year as a part of the 12th Five Year Plan and we started working on the project from November. The main objective is to preserve the dying language," said Hasnain, a faculty member of linguistics at Aligarh Muslim University.

"The problem is that communities exist. But speakers are dwindling and the language is on the verge of extinction. Our team is trying to gather as much data as possible on the language," he added.

Hasnain and his team, who are being supported by Tribal Cultural Society, Tata Steel and Karim City College, have also taken up research in two tribal languages of Himachal.

The Centre has identified 500 endangered languages. These are spoken by 10,000 or less people as per the 2001 Census.

Hasnaian said Birhor and other Chotanagpuri languages fall under the category of Austroasiatic Languages in India. Other broad categories include Indo-Aryan, Dravidian, Tibeto-Burman and Andamanese and Nicobarese.

Birhors prefer to speak the language at home. But even they had forgotten the proverbs, riddles and myths associated with their culture.

बिरहोर भाषा को विलुप्त होने से बचाने की पहल

जागरण संवाददाता, जमशेदपुर : भाषा महज संवाद का जरिया नहीं है बल्कि यह पीढ़ियों से चल रहे ज्ञान, समाज के लिए उपयोगी जानकारियों सहित सांस्कृतिक विरासत को अपने साथ लेकर चलने का माध्यम भी है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में बोली जानेवाली भाषाएं अपने साथ कई गूढ़ ज्ञान को भी समेटे हुए हैं। न केवल इनके संरक्षण की जरूरत है बल्कि व्यापक स्वरूप प्रदान करने की भी जरूरत है। इस बात को समझते हुए देश के विभिन्न हिस्सों में बोली जानेवाली भाषाओं के संरक्षण व संवर्धन की पहल की गई है। झारखंड में बिरहोर भी उनमें से एक हैं। लुप्त होती बिरहोर भाषा के संरक्षण व दस्तावेजीकरण के लिए अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर इम्तियाज हसनेन सहित तीन सदस्य टीम शहर पहुंची है। यह टीम घाटशिला, गुमला व झारखंड के कई जिलों में जाकर लुप्त होती भाषा बिरहोर पर रिसर्च करेगी। इस भाषा का शब्दकोष तैयार करेगी और आनेवाली पीढ़ियों के लिए एक नया प्लेटफार्म तैयार करेगी ताकि वे इसे और आगे बढ़ा सकें। करीम सिटी कॉलेज के मासकाम विभाग में शुक्रवार को संवाददाताओं से रूबरू प्रोफेसर इम्तियाज हसनेन ने बताया कि केन्द्रीय मानव संसाधन विभाग की ओर से उन्हें जमशेदपुर भेजा गया है।

अमेजन के जंगल में कैंसर की दवा

जमशेदपुर : संवाददाता सम्मेलन में भाषाओं की महत्ता के बारे में बातचीत के दौरान प्रो. इम्तियाज हसनैन ने बताया कि अमेजन के जंगल में ऐसी वनस्पतियां हैं जिनका प्रयोग कैंसर जैसी बीमारी की दवा तैयार करने में किया जाता है। अमेजन के वनवासियों को पीढ़ियों से उनके इर्द-गिर्द पाई जानेवाली वनस्पतियों का ज्ञान है क्योंकि ये लोग प्रकृति के करीब हैं। इनके संरक्षण और संवर्धन की जरूरत समझी गई। कई कंपनियां वहां के वनस्पतियों और वनवासियों के संरक्षण पर करोड़ों रुपये खर्च कर रही हैं।

500 भाषाएं की जाएंगी संरक्षित

प्रोफेसर इम्तियाज हसनैन ने बताया कि देश के विभिन्न हिस्सों में बोली जानेवाली ऐसी 500 भाषाओं को उनके संरक्षण और दस्तावेजीकरण के लिए चयनित किया गया है जिन भाषाओं को बोलनेवालों की संख्या 10000 से कम रह गई है। इम्तियाज हसनैन की टीम को 500 भाषाओं में से तीन भाषाओं के संरक्षण का काम करने की जिम्मेदारी दी गई है। उन्होंने बताया कि संगीता सरकार, फारुक मीर व वे खुद तीन सदस्यीय टीम में शामिल हैं। इस काम में करीम सिटी कालेज के विनय मिश्रा व तनमय स्वाशी भी सहयोग करेंगे। बिरहोर भाषा पर डाक्यूमेंट्री फिल्म भी बनाई जाएगी।

हिन्दुस्तान • जमशेदपुर • शनिवार • 15 फरवरी 2014 4

देश की बोलियों का संरक्षण जरूरी : इम्तियाज

जमशेदपुर | संवाददाता

प्रोफेसर इम्तियाज हसनैन ने कहा कि बिरहोर समेत देश की पांच सौ बोलियों पर विलुप्तिकरण का खतरा मंडरा रहा है। देश के अलग-अलग राज्यों में बोली जाने वाली बोलियों पर दूसरी भाषाओं का अधिपत्य होता जा रहा है। इनका संरक्षण और बचाव जरूरी है।

अलीगढ़ मुस्लिम विवि के भाषा विभाग के प्रोफेसर इम्तियाज हसनैन करीम सिटी कॉलेज में शुक्रवार को संवाददाता सम्मेलन में भाषाओं के संरक्षण और बचाव के विषय पर संबोधित कर रहे थे।

संवाददाता सम्मेलन करते पदाधिकारी।

इस तरह होगा बोलियों और भाषाओं का संरक्षण

- रिसर्च के बाद लोगों को किया जाएगा जागरूक
- फोटो डिक्शनरी का होगा निर्माण
- कला, साहित्य और संस्कारों का बनेगा दस्तावेज
- ट्राई लैंग्वेंज डिक्शनरी का होगा निर्माण

भाषाओं पर रिसर्च करने पहुंचे जमशेदपुर : भाषाओं पर रिसर्च के लिए जमशेदपुर पहुंचे हसनैन ने कहा कि सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैग्वेंज की ओर से स्कीम फॉर प्रोटेक्शन ऑफ इंडेजरंड लैग्वेंज कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके तहत संगीता सरकार और फारुख मीर की टीम झारखंड में बिरहोर बोली की वर्तमान स्थिति पर रिसर्च कर रही है। करीम सिटी के छात्र इस कार्य में टीम की मदद कर रहे हैं।

संवाददाता सम्मेलन में करीम सिटी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मोहम्मद जकारिया और मास कॉम विभाग की प्रमुख डॉ. नेहा तिवारी भी उपस्थित थीं।

खुद की बोली भूलने लगे बिरहोर : इम्तियाज हसनैन का कहना है कि बिरहोर अब खुद की बोली भी भूलने लगे हैं। अपनी बोली के मुहावरे, कहावतों तक को पहचानने में स्थानीय बिरहोर कठिनाई महसूस कर रहे हैं।

पहल | झारखंड की विलुप्त होती भाषा 'बिरहोर' को बचाने की कवायद में सरकार की स्कीम के तहत जुटी स्पेल टीम

भाषा ही पहचान : प्रो. इम्तियाज

भास्कर न्यूज | जमशेदपुर

मूलभाषा ही आपकी संस्कृति और खुद की पहचान होती है। अगर यह समाप्त होती है, तो एक प्रकार से व्यक्ति अपने खुद की पहचान खो देता है। यह बातें शुक्रवार को करीम सिटी कॉलेज में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में अलीगढ़ यूनिवर्सिटी से आए भाषाविद् प्रो. इम्तियाज हसन ने कहीं। उन्होंने बताया कि ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट विभाग की ओर से देश की विलुप्त होती भाषा को बचाने के लिए स्कीम फॉर प्रिवेंशन ऑफ इन डेंजर लैंग्वेज (स्पेल) अभियान आरंभ किया गया है।

इसके अंतर्गत देश की 500 विलुप्त होती ऐसी भाषा जिसे बोलने वालों की संख्या मात्र 10 हजार है को बचाने और संजोने का काम किया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत उन्हें देश की तीन विलुप्त होती भाषा झारखंड की 'बिरहोर' और हिमाचल की 'चिनार' और 'गहरी' को बचाने की जिम्मेवारी दी गई है। यह 12वीं पंचवर्षीय योजना के तहत नवंबर माह से आरंभ की गई है। प्रो. इम्तियाज के साथ कोलकाता यूनिवर्सिटी की संगीता सरकार व कश्मीर यूनिवर्सिटी के फारुख अहमद भी हैं। संवाददाता सम्मेलन में करीम सिटी कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. मो. जकारिया, मास कॉम विभाग की हेड डॉ. नेहा तिवारी उपस्थित थीं।

करीम सिटी कॉलेज में पत्रकारों को जानकारी देते प्रो. इम्तियाज हसन व अन्य।

अब तक क्या हुआ

- घाटशिला में रहने वाले 12 बिरहोर परिवार के 36 लोगों से बातचीत।
- 10 फीसदी लोग ही पूरी तरह से बोल पा रहे थे अपनी भाषा।
- घरों में नहीं मिले संस्कृति से जुड़े सामान।
- प्रोफेसर इम्तियाज के अनुसार, बिरहोर ऑस्ट्रेलियन लैंग्वेज ग्रुप की भाषा है।

क्या होगा अभियान के दौरान

प्रोफेसर इम्तियाज ने बताया कि छह महीने तक उनका यह अभियान चलेगा। इस दौरान वे इस भाषा को बोलने वालों से मुलाकात कर उनसे जानकारी इकट्ठा करेंगे। उन्होंने बताया कि करीम सिटी कॉलेज के लिंग्विस्टिक विभाग के सहयोग से पिछले दो दिनों में घाटशिला में जाकर वहां इस भाषा को बोलने वालों से मुलाकात की है।

बनेगी ट्राई लैंग्वेज डिक्शनरी

अभियान के पूरा होने पर उनके द्वारा पूरी रिपोर्ट एचआरडी विभाग को सौंपी जाएगी। इसके बाद इन भाषाओं की ट्राई लैंग्वेज डिक्शनरी बनाई जाएगी। इसमें मूलभाषा के शब्दों का अर्थ अंग्रेजी और क्षेत्र के अनुसार डोमिनेटेड भाषा में लिखा होगा। इसके अलावा हर भाषा से जुड़ी संस्कृति की इनसाइक्लोपीडिया और उनके वास्तविक परिवेश में डॉक्यूमेंट्री बनाई जाएगी। इसमें उनके जन्म, मृत्यु, शादी व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों को वास्तविक परिवेश में रिकॉर्ड किया जाएगा। जमशेदपुर में डाक्यूमेंट्री बनाने का जिम्मा करीम सिटी कॉलेज के मास कॉम विभाग को सौंपा गया है।

प्रभात खबर \ सोसायटी \ शिक्षा

सीआइआइएल तैयार कर रहा बिरहोरों की डिक्शनरी

वरीय संवाददाता, जमशेदपुर

स्कीम फॉर द प्रिवेंशन एंड प्रोटेक्शन ऑफ इनडेंजर्ड लैंग्वेजेज (एसपीपीइएल) के तहत विलुप्त होती भाषाओं के संरक्षण व बचाने की कवायद शुरू की गयी है. इसके तहत सेंट्रल इंस्टीट्यूट फॉर इंडियन लैंग्वेजेज (सीआइआइएल), मैसूर राज्य की बिरहोर भाषा की इनसाइक्लोपेडिक डिक्शनरी तैयार कर रहा रहा है. साआइआइएल न सिर्फ यह डिक्शनरी, बल्कि ट्रिलिंगुवल डिक्शनरी और बिरहोरों की सभ्यता-संस्कृति में समाहित तथ्य व लोकाचार आदि का दस्तावेज भी तैयार कर रहा है. यहां शोध कार्य आरंभ कर दिया गया है.अलीगढ़ विश्वविद्यालय के प्रो इम्तियाज हसनैन के नेतृत्व में कश्मीर विश्वविद्यालय के फारुख अहमद मीर व कोलकाता विश्वविद्यालय की संगीता सरकार जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में पिछले एक माह से शोध कर रहे हैं. वहीं करीम सिटी कॉलेज के विद्यार्थी दस्तावेज तैयार कर रहे हैं. शोध में ट्राइवल कल्चर सेंटर, टाटा स्टील भी सहयोग कर रहा है.

500 भाषाएं, बोलनेवाले 10 हजार से भी कम. यहां करीम सिटी कॉलेज के मास कॉम विभाग में प्रेस को संबोधित करते हुए प्रो इम्तियाज हसनैन ने बताया कि 12वीं पंचवर्षीय योजना के तहत गत नवंबर माह में यह स्कीम लांच की गयी है. इसके तहत ऐसी 500 भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया है, जिन्हें बोलनेवालों की संख्या 10 हजार से भी कम है. इनमें बिरहोर भाषा भी है.प्रो हसनैन ने बताया कि शोध कार्य के दौरान यह देखने को मिला कि बिरहोर घर को छोड़ बाहर अपनी भाषा नहीं बोलते. वे हो, संथाली व बांग्ला बोलते हैं. उन्होंने बताया कि छोटानागपुर की क्षेत्रीय भाषाएं एस्ट्रोएशियाटिक भाषाओं से मिलती हैं.

अंग्रेजी किलर लैंग्वेज. प्रो हसनैन ने कहा कि वैश्वीकरण के दौर में सभी संपर्क भाषा पर ध्यान दे रहे हैं. इसमें इंग्लिश प्रमुख है. देखा जाये, तो इंग्लिश क्षेत्रीय भाषाओं को निगलती जा रही है. मौके पर करीम सिटी कॉलेज के प्राचार्य डॉ मो जकरिया और मास कॉम विभागाध्यक्ष डॉ नेहा तिवारी भी उपस्थित थीं.